Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

स्वतंत्र भारत में राजनीति

अध्याय - 4

भारत के विदेश संबंध

भाग - 2

Satyaveer Yadav

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भारत की स्थिति

- भारत ने अन्य सभी देशों की संप्रभुता का सम्मान करने और शांति कायम करने का निर्णय लिया।
- इसकी झलक संविधान के नीति निर्देशक तत्वों में।

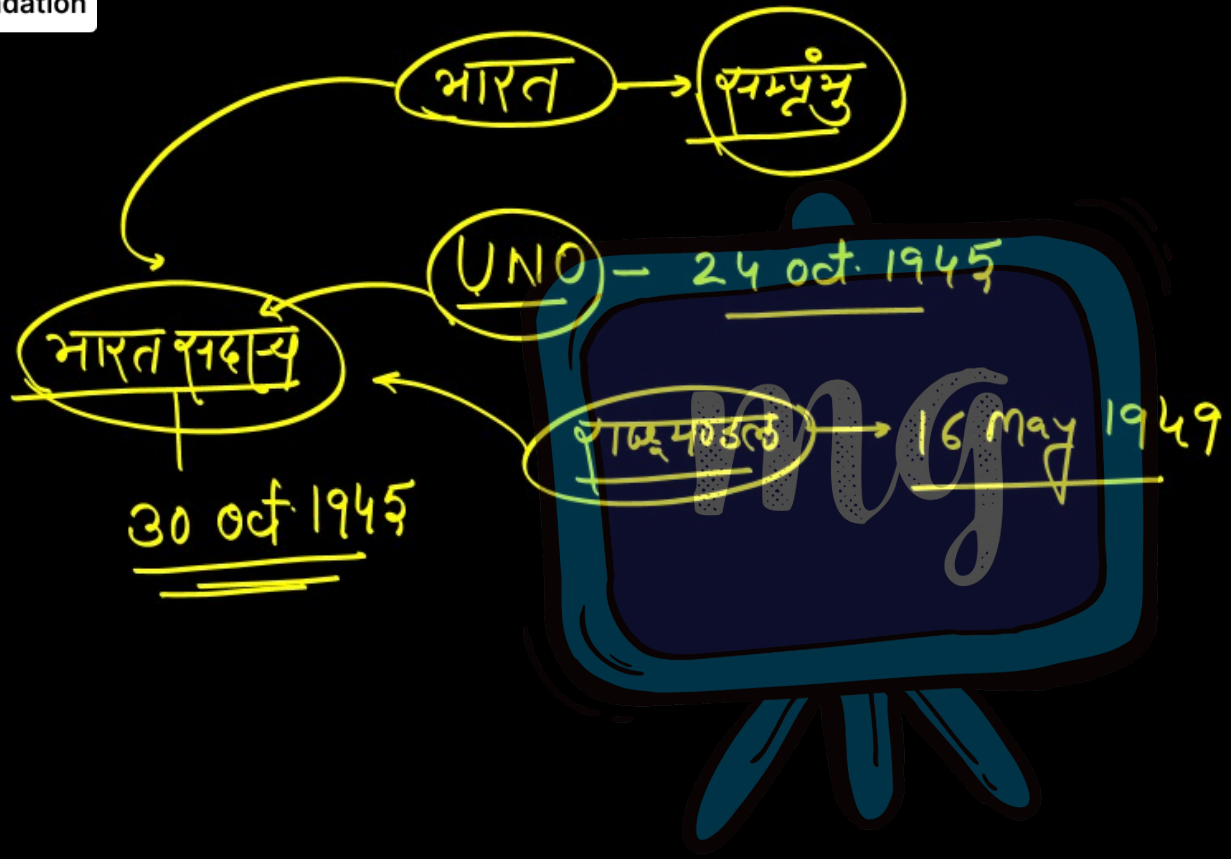
भाग 4 [अनु. 51]

सवाल :-

- 1950 और 1960 के दशक में विश्व राजनीति में भारत दोनों खेमों में से किस खेमें में शामिल हुआ?
- क्या भारत अपनी विदेश नीति को शांतिपूर्ण ढंग से बाहर लागू करने और अंतर्राष्ट्रीय झगड़ों से बचने में सफल रहा?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पूंजीवाद / साम्यवाद

- दुनिया के देश बंटे दो खेमों में



- दोनों खेमों के बीच आर्थिक, राजनीतिक सैन्य टकराव जारी



UNO

- संयुक्त राष्ट्र संघ अस्तित्व में आया।

- परमाणु हथियारों का निर्माण हुआ।

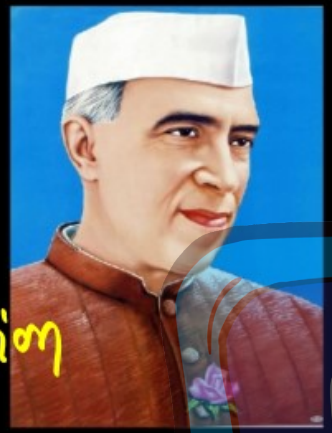


- चीन में कम्युनिस्ट शासन की स्थापना

- अनौपनिवेशीकरण की प्रक्रिया आरंभ

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



नेहरू की भूमिका :-

- प्रधानमंत्री भी और विदेशमंत्री भी।

नेहरू की विदेश नीति के तीन उद्देश्य

- कठिन संघर्ष से प्राप्त संप्रभुता को बचाए रखना
- क्षेत्रीय अखण्डता को बनाए रखना
- तेज रफ्तार से आर्थिक विकास करना।

- विदेश नीति पर नेहरू को बढ़त हासिल।

NIA
National Investigation Agency
Sadavarul Vate

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

04 April 1949 — 32 — NATO — सैन्य संगठन — पूंजीवाद

14 May 1955 — वारसा पैक्ट — सैन्य संगठन — साम्यवाद

दो खेमों से दूरी :-

- भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति का पालन किया।
- भारत ना तो (NATO) में शामिल हुआ और ना ही 'वारसा पैक्ट' में।

सध नहीं पाया संतुलन :-

- 1956 में ब्रिटेन ने स्वेज नहर के मामले में मिश्र पर आक्रमण किया तो भारत द्वारा इसकी विश्व व्यापी निंदा।
- इसी साल सोवियत संघ द्वारा हंगरी पर आक्रमण के मामले में भारत मौन।
- फिर भी अधिकतर मामलों में भारत ने स्वतंत्र नीति को अपनाया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

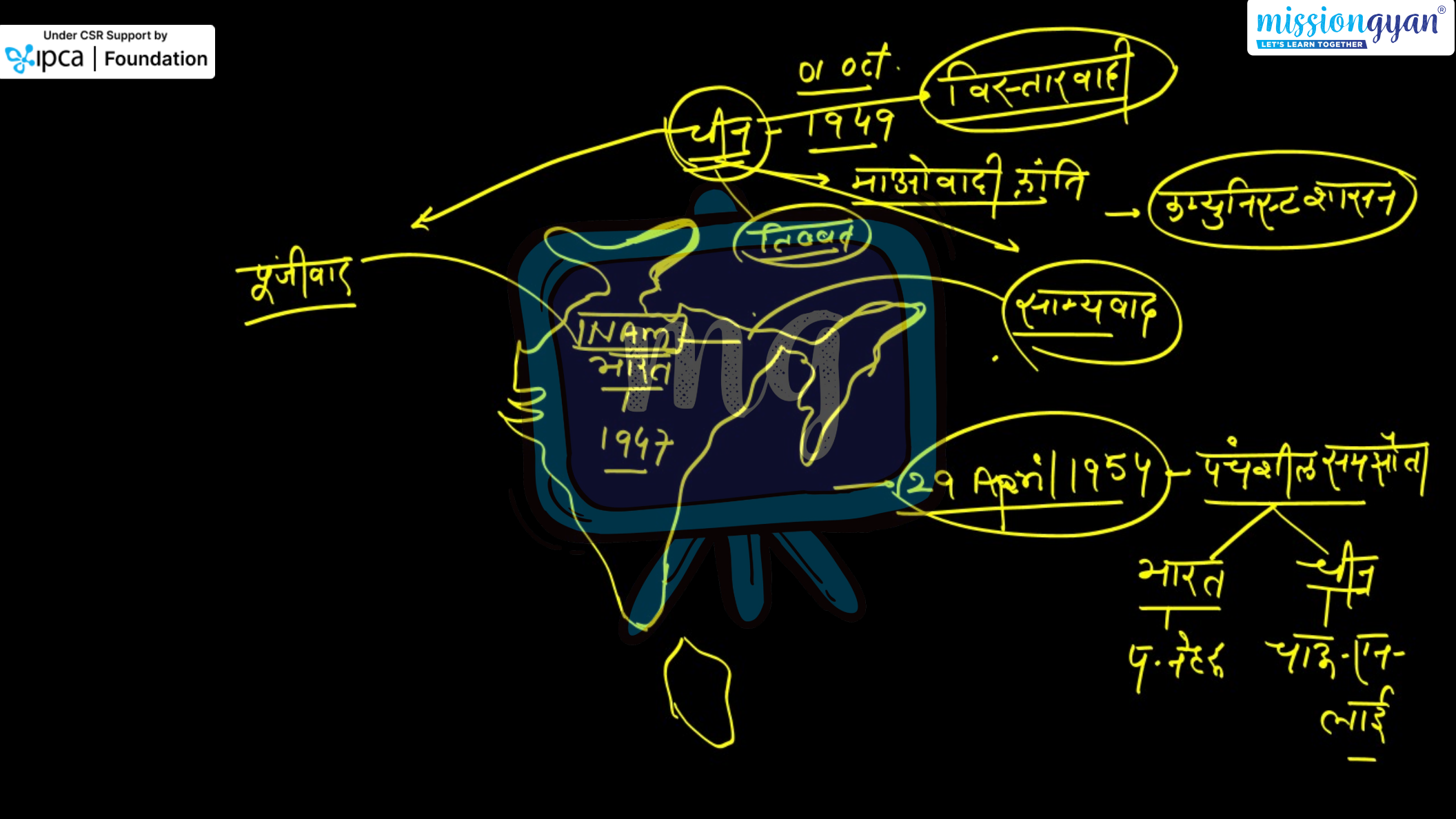
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

एफ्रो-एशियाई एकता

- भारत के आकार अवस्थिति और शक्ति संभावना को भांपकर नेहरू ने विश्व के मामलों में खासकर एशियाई मामलों में भारत के लिए बड़ी भूमिका निभाने का स्वप्न देखा।
- भारत ने मार्च 1947 में ही एशियाई संबंध सम्मेलन का आयोजन किया।
- भारत ने इंडोनेशिया के स्वतंत्रता संग्राम के समर्थन में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन किया।
- इंडोनेशिया के बांडुग में 1955 में 'एफ्रो-एशियाई' सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- बांडुग सम्मेलन में ही गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव पड़ी।
- गुटनिरपेक्ष आंदोलन का पहला सम्मेलन 1961 में बेलग्रेड में हुआ।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पृष्ठभूमि



- 1949 में चीनी क्रांति हुई।
- क्रांति के बाद कम्यूनिस्ट सरकार को मान्यता देने वाले पहले देशों में एक भारत भी।
- नेहरू का चीन पर गहरा विश्वास।
- नेहरू के कुछ सहयोगियों (जैसे - सरदार पटेल) को चीन को लेकर शंका - किंतु नेहरू ने नकारा।
- भारत की चीन से लगती सीमा पर सेना के बजाय अर्द्ध-सैनिक बलों की रखवाली।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पंचशील के सिद्धांत

- भारत के प्रधानमंत्री एवं चीन के प्रमुख चाऊ एन लाई ने संयुक्त रूप से 29 अप्रैल 1954 को पंचशील सिद्धांतों की घोषणा की।
  - अहस्तक्षेप
  - अनाक्रमण
  - शांतिपूर्ण सहअस्तित्व
  - परस्पर सहयोग व लाभ को बढ़ावा।
  - क्षेत्रीय अखंडता व प्रभुसत्ता का सम्मान

